अथोक्तलक्षणस्य यतिधर्मस्य

जिनागमोद्धृतत्वेनाविसंवादित्वाच्छध्दानगोचरीकृतस्य

शश्वदनुष्आनेऽभुयदयनिरेयसफलसंपादकत्वमाह--

इदं सुरुचयो जिनप्रवचनाम्बुधेरुद्धृतं
सदा य उपयुञ्जते रमणधर्मसारामृतम् ।
शिवास्पदमुपासितक्रमयमा: शिवाशाधरै :
समाधिविधुतांहस: कतिपयैर्भवैर्यान्ति ते ॥ १०० ॥

उपासितक्रमयमा:-- आराधितचरायुगा: । अथवा उपासित:--सेवित: क्रम आनुपूर्वी यमश्च संयमो येषां । शिवाशधरै:-- मुमुखुभि: ।

इति भद्रम् ॥ १०० ॥

इत्याशाधरदृब्धायां धर्मामृतपञ्जिकायां ज्ञानदीपिकापसांायां
नवमोऽध्याय: ।

अत्राध्याये ग्रन्थप्रमाणं पञ्चचतवारिंशदधिकानि चत्वारि शतानि ।
अंकत: ४४५ ।

नवाध्यामेतां श्रमणवृषसर्वस्वविषयां
निबन्धप्रव्यक्तामनवरतमोाचयति य: ।
स सद्वृत्तोदर्चि क खित क कि ज्ञे क्षयसुखं
अयत्यक्षार्थाशाधरपरमदूरं शिवपदम् ॥
इत्याशाधरदृब्धायां स्वीपज्ञधर्मामृतपञ्जिकायां प्रथमो यतिस्कन्ध:
समाप्त: ।

क्रियाएँ कृतिकर्म नामक अंग-बाह्य श्रुतमें वर्णित हैं वहींसे उनका वर्णन इस शास्त्रमें भी किया गया है। नित्य-नेमित्तिक क्रियाएँ मुनि सर्वदेशसे नियमित रुपसे करते हैं ओर रावक अपने पदके अनुसार करता है। मुनियोंके इस शास्त्रमें जो क्रियाएँ कही गयी हैं वे सब केव्र मुनियोंकेलिए ही कही गयी ऐसा मानकर रावकोंको उसकी उपेक्ष नहीं करनी चाहिए, क्योंकि श्रावक दशमें अभ्यास करनेसे ही तो मुनिपद धारण करनेपर उनका पालन किया जा सकता है॥ ९९॥

आगे कहते हैं कि इस ग्रन्थमें जो मुनिधर्मका वर्णन किया है वह जिनागमसे लेकर ही किया है इसलिए उसमें कोई विवाद आदि नहीं है वह प्रमाण है। इसलिए उसपर पूर्ण श्रध्दा रखकर सदा पान करनेसे अभ्युदय ओर मोक्षकी प्राप्ति होती है--

जिनागमरुपी समुद्रसे निकाले गये इस मुनिधर्मकेसाररुप अमृतका जो निर्मा सम्यग्दृष्टि सदा सेवन करते हैं, मोक्षकी आशा रखनेवाले रमण और इन्द्रादि उनके चरण युगोंकी आराधना करते हैं। अथवा क्रमपूर्वक संयमकी आराधना करनेवाले वे निमल

सं पंडित ग्रन्थप्रमाण ष्टचत्वारिशच्छतानि। अंकत: ४८००।

सम्यग्दृष्टि धर्म और शुक्लध्यानके द्वारा शुभाशुभ कर्मोंको नष्ट करके दो-तीन या सात-आठ भवोंमें मोक्ष स्थानको गमन करते हैं॥ १००॥

इस प्रकार आशाधर रचित धर्मामृतकेअनतर्गत अनगारधर्मकी भव्यकुमुदचन्द्रिका टीका

तथा ज्ञानदीपिका पंजिकाकी अनुसारिणी हिन्दी टीकामें नित्यनैमित्तिक क्रिया विधान नामक नवम अध्याय समापत हुआ॥